उल्लास

प्रवेशिका

संक्षिप्त संस्करण

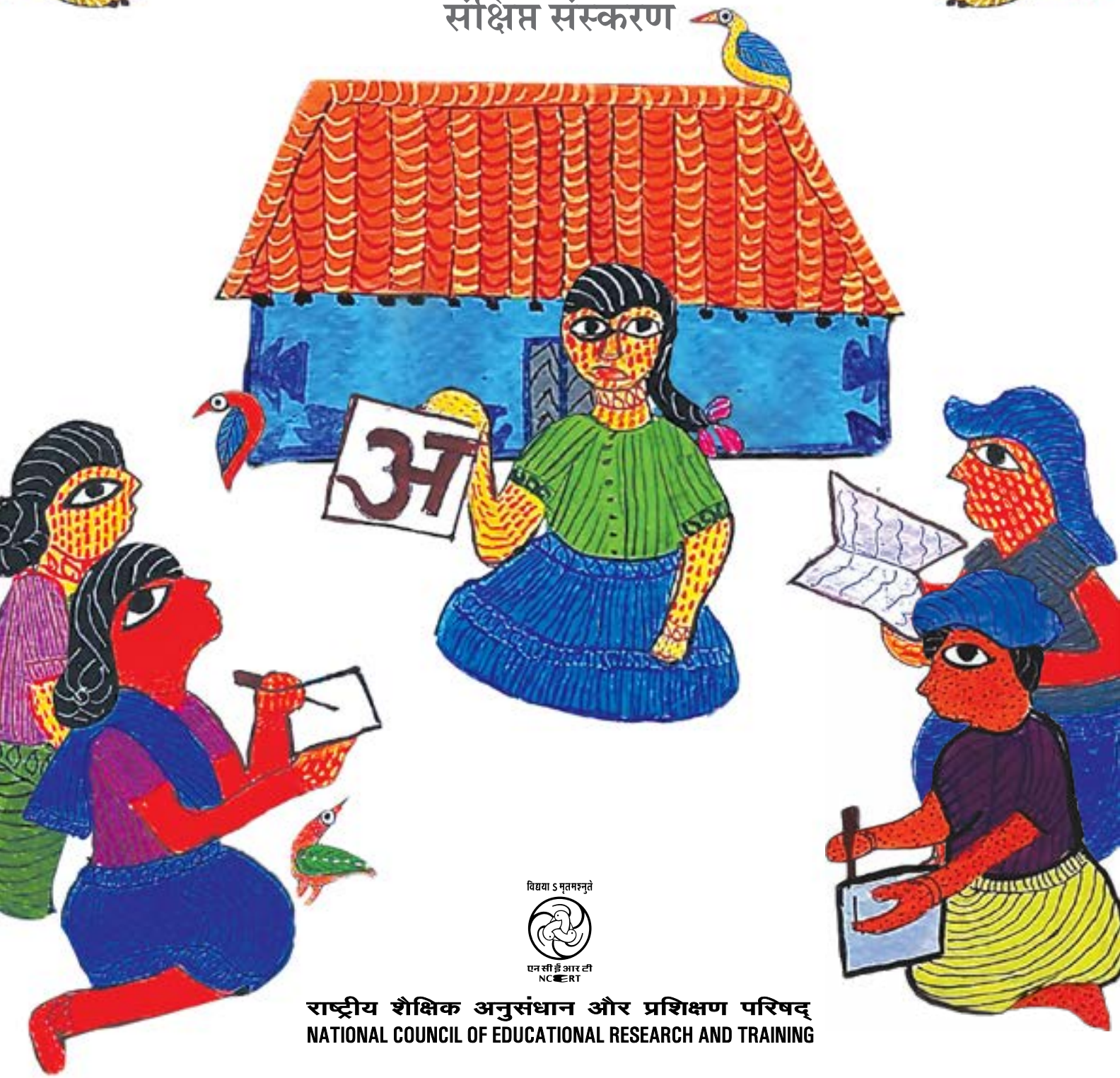

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पंद्रह वर्ष या उससे अधिक आयु वर्ग के उन सभी व्यक्तियों को साक्षर बनाने के अवसर उपलब्ध करवाने पर बल देती है, जो किन्हीं कारणों से साक्षरता और संख्या-ज्ञान अर्जित नहीं कर सके। इस संदर्भ में इस नीति की अनुशंसाओं के क्रियान्वयन के लिए 1 अप्रैल 2022 से भारत सरकार द्वारा *'नव भारत साक्षरता कार्यक्रम'* (जिसका लोकप्रिय नाम **उल्लास** है) प्रारंभ किया गया है जिसमें प्रौढ़ शिक्षा के सभी पक्ष शामिल हैं। इस योजना का उद्देश्य बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान, महत्वपूर्ण जीवन कौशल, व्यावसायिक कौशल, बुनियादी शिक्षा और सतत शिक्षा का विकास है।

नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के दस्तावेज़ में यह उल्लिखित है कि 2011 की जनगणना के अनुसार देश में 15 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग में असाक्षरों की कुल संख्या 25.76 करोड़ (पुरुष 9.08 करोड़, महिला 16.68 करोड़) है। 2009–0 से 2017–18 के दौरान साक्षर भारत कार्यक्रम के तहत साक्षर के रूप में प्रमाणित व्यक्तियों की 7.64 करोड़ की प्रगति को ध्यान में रखते हुए, यह अनुमान लगाया गया है कि वर्तमान में भारत में लगभग 18.12 करोड़ वयस्क अभी भी असाक्षर हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वर्ष 2030 तक 100 प्रतिशत साक्षरता प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित करती है और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् में राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र की स्थापना की अनुशंसा करती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर अनेक सतत प्रयास किए जा रहे हैं।

शिक्षार्थी अपने जीवन के अलग-अलग संदर्भों में अपनी भाषा या भाषाओं का मौखिक प्रयोग भी करते हैं और गणितीय समझ के साथ अपने-अपने कार्यों में लेन-देन भी करते हैं। इन्हें केवल पढ़ने-लिखने और संख्या–ज्ञान सीखने की आवश्यकता है जिससे गुणवत्तापूर्ण एवं गरिमामय जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त हो सके।

'उल्लास' का अर्थ है – समाज में सभी के लिए आजीवन सीखने की समझ (ULLAS- Understanding of Lifelong Learning for All in Society) और इसका आदर्श वाक्य है – ***जन-जन साक्षर।*** 'उल्लास' के अंतर्गत असाक्षर शिक्षार्थियों के लिए *उल्लास* प्रवेशिका (संक्षिप्त संस्करण) का निर्माण किया गया है। यह प्रवेशिका *'उल्लास–प्रवेशिका (चार भाग)'* का *संक्षिप्त संस्करण* है। यह प्रवेशिका समेकित रूप में बनाई गई है, जिसमें भाषा और गणित दोनों शामिल हैं। विषय सामग्री के रूप में सात विषय (थीम) तय किए गए हैं जो आमतौर पर हमारे आस-पास दिखाई देते हैं। ये विषय –'परिवार और पड़ोस', 'बातचीत', 'हमारा रहन-सहन', 'हमारे आस-पास', 'खान-पान और सेहत', 'मतदान' और 'कानूनी जानकारी' हैं। शिक्षार्थियों के पढ़ने-लिखने और संख्या–ज्ञान सीखने में मदद के लिए एक मार्गदर्शिका का भी निर्माण किया गया है। यह मार्गदर्शिका स्वयंसेवी शिक्षकों या शिक्षकों द्वारा उपयोग में लाई जाएगी, जो शिक्षार्थियों को सीखने में मदद करेगी। प्रवेशिका और मार्गदर्शिका में दिए गए बिंदु सुझाव के तौर पर हैं। शिक्षार्थियों के स्तर, क्षमता, आवश्यकताओं और स्थानीय परिवेश को ध्यान में रखते हुए इनमें आवश्यकतानुसार बदलाव किया जा सकता है।

प्रवेशिका में शामिल बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान संबंधी शिक्षण-बिंदुओं को केंद्र में रखते हुए शिक्षार्थियों या स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए सभी विषयों (थीम) के आधार पर अभ्यास पत्र और ऑनलाइन मॉड्यूल या वीडियो कार्यक्रमों का भी निर्माण किया गया है।

‘उल्लास’ प्रवेशिका में शामिल बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान संबंधी शिक्षण-बिंदुओं को केंद्र में रखते हुए शिक्षार्थियों या स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए ऑनलाइन मॉड्यूल या वीडियो कार्यक्रमों का भी निर्माण किया गया है जो दीक्षा मंच (DIKSHA Portal) पर ‘सभी के लिए शिक्षा’ वर्टिकल और एनसीईआरटी के यूट्यूब चैनल @NCERTOFFICIALपर उपलब्ध हैं। मार्गदर्शिका और वीडियो कार्यक्रम की सहायता से शिक्षार्थियों को सीखने-सिखाने में मदद मिलेगी।

परिषद् इस प्रवेशिका (संक्षिप्त संस्करण) के निर्माण में शामिल सभी विषय-विशेषज्ञों और परिषद् के संकाय सदस्यों व परियोजना-कर्मियों के अथक परिश्रम के लिए आभार व्यक्त करती है। साथ ही उन सभी रचनाकारों और संस्थाओं के प्रति भी आभारी है, जिन्होंने विविध प्रकार की सामग्री के उपयोग में उदारतापूर्वक सहयोग दिया। इस प्रवेशिका को और अधिक बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

फरवरी, 2024
नयी दिल्ली

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नयी दिल्ली

प्रस्तावना

साक्षर होना, पढ़ना-लिखना और संख्या-ज्ञान सीखना हर व्यक्ति की एक बुनियादी आवश्यकता है, जो गरिमामय जीवन जीने में सहायता करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के क्रियान्वयन के लिए भारत सरकार द्वारा 'नव भारत साक्षरता कार्यक्रम' योजना प्रारंभ की गई है जिसका लोकप्रिय नाम ***'उल्लास'*** ***(ULLAS-Understanding of lifelong Learning for All in Society)*** है – ***समाज में सभी के लिए आजीवन सीखने की समझ***। इस योजना का उद्देश्य है– 15 वर्ष और उससे अधिक आयु वाले वयस्कों को इस रूप में साक्षर करना कि वे एक सशक्त व्यक्तित्व बन सकें और समाज के विकास में अपना योगदान दे सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप 'नव भारत साक्षरता कार्यक्रम' में मुख्य रूप से पाँच घटक सम्मिलित हैं – (1) बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान, (2) महत्वपूर्ण जीवन कौशल, (3) बुनियादी शिक्षा, (4) व्यावसायिक कौशल, (5) सतत शिक्षा। असाक्षर शिक्षार्थियों को बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान सिखाने के लिए एक संक्षिप्त प्रवेशिका का निर्माण किया गया है, जिसका नाम है - ***उल्लास: प्रवेशिका संक्षिप्त संस्करण*** यह प्रवेशिका समेकित रूप में बनाई गई हैं, जिसमें भाषा और गणित दोनों शामिल हैं। यह प्रवेशिका भाषा और गणित संबंधी सीखने के प्रतिफलों पर आधारित है। इस प्रवेशिका में विषय सामग्री के रूप में उन विषयों को शामिल किया गया है, जो किसी भी वयस्क के जीवन से जुड़े हुए हैं। ये विषय हैं – परिवार और पड़ोस, बातचीत, रहन-सहन, आस-पास का परिवेश, खान-पान और सेहत, मतदान, कानूनी जानकारी, समय, डिजिटल अंक, बैंक, कैलेंडर, पर्यावरण और साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता आदि। उल्लास प्रवेशिका में इन्हीं विषयों में भाषा की कुशलताएँ और गणितीय अवधारणाओं को एक साथ लिया गया है। उदाहरण के लिए, 'परिवार और पड़ोस' पाठ में दिए गए बड़े आकार के चित्र के माध्यम से हिंदी भाषा के परिचित शब्दों की पहचान, शब्द पढ़ना और अक्षर-पहचान (अ, आ, न, प, स, र, व) तथा गणित में 1 से 20 तक की संख्याओं की पहचान करना, पढ़ना और लिखना सिखाने का प्रयास किया गया है। इसी प्रकार से 'मतदान' पाठ में हिंदी भाषा के अक्षर (क्ष, घ, ध, ढ, ढ़), शब्द, वाक्य एवं गणित में समय देखना और उसका उपयोग करना (12 और 24 घंटे वाली घड़ी), कैलेंडर, समय-सारणी, रेल टिकट पर दी गई सूचनाओं की समझ बनाना, डिजिटल अंकों की पहचान करना और लिखना सिखाने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार ***उल्लास: प्रवेशिका संक्षिप्त संस्करण*** हिंदी भाषा और गणित को एक साथ संबोधित करती है। स्वयंसेवी शिक्षक स्वयं भी सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए अपने आस-पास उपलब्ध अन्य प्रकार की सामग्री का भी प्रयोग कर सकते हैं।

आशा है कि यह सामग्री पढ़ना-लिखना और गणित सीखने में असाक्षर शिक्षार्थियों के लिए सिद्ध सहायक होगी।

सामग्री के संवर्धन के लिए आप सभी के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

उषा शर्मा
प्रोफेसर एवं प्रभारी
राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ
एनसीईआरटी

फरवरी, 2024
नयी दिल्ली

स्वयंसेवी शिक्षकों से दो बातें

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत *'सभी के लिए शिक्षा'* (पूर्व में प्रौढ़ शिक्षा) की अनुशंसाओं के क्रियान्वयन हेतु '***उल्लास***' में राष्ट्रीय स्तर पर विविध प्रकार की शैक्षणिक सामग्री के निर्माण का उल्लेख किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मुख्य घटक के रूप में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान पर बल देते हुए शिक्षार्थियों के जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण जीवन कौशलों पर विशेष ध्यान केंद्रित करती है। नव भारत साक्षरता कार्यक्रम में दिए गए दिशा-निर्देशों को पूरा करने के लिए 'उल्लास' (ULLAS) को एक ऐसे माध्यम के रूप में देखा जा रहा है जो शिक्षार्थियों के पढ़ना-लिखना सीखने के लिए अनेक संभावनाओं के द्वार खोलता है। इसी बिंदु को ध्यान में रखते हुए ***उल्लास:प्रवेशिका संक्षिप्त संस्करण*** का निर्माण किया गया है, जो बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान से संबंधित सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने में सहायक है। इसमें पढ़ना और लिखना साथ-साथ होता है यानी भाषा और गणित एकीकृत रूप में चलता है। सात अध्यायों मे विभाजित इस ***उल्लास:प्रवेशिका संक्षिप्त संस्करण*** में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या–ज्ञान के साथ-साथ जीवन के महत्वपूर्ण कौशलों, जैसे – स्वास्थ्य, मतदान, कानूनी साक्षरता, लोक जीवन आदि को स्थान दिया गया है।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या–ज्ञान सभी के लिए शिक्षा का एक महत्वपूर्ण साधन है। इसका उद्देश्य 15 वर्ष अथवा उससे अधिक आयु वाले उन शिक्षार्थियों को साक्षर बनाना है, जो शिक्षित तो हैं लेकिन अक्षर ज्ञान से वंचित हैं यानी वे असाक्षर हैं। ***उल्लास*** के अंतर्गत पढ़ने-लिखने व संख्या–ज्ञान के कौशल को हमें उन शिक्षार्थियों तक लेकर जाना है जो किन्हीं कारणों से स्कूल नहीं जा पाए और शिक्षा से दूर रहे। ये वे शिक्षार्थी भी हो सकते हैं जो किसी की मदद से थोड़ा बहुत पढ़ना जानते हों इसलिए पढ़ने-पढ़ाने की इस प्रक्रिया में हमारे शिक्षार्थी अलग-अलग स्तर पर हो सकते हैं।

यह ध्यान में रखने की बात है कि ये शिक्षार्थी समझदार हैं, जीवन का एक लंबा अनुभव रखते हैं और शायद कुशल कारीगर भी हों। ये शिक्षार्थी संभव है कि कामकाजी हों या किसी प्रकार के श्रम द्वारा आजीविका चलाते हों। ये घर और घर के बाहर की ज़िम्मेदारियाँ उठाने वाले व्यक्ति भी होंगे। हमारा उद्देश्य यह है कि हम उनके जीवन को साक्षरता की लौ से प्रकाशवान करें और उनके जीवन को सुगम और अधिक सरल बनाने में सहयोग करें। वे पढ़ने-लिखने और गणित की समझ के द्वारा अपने अनुभवों से ज़्यादा सीख पाएँ, सोच और समझ के दायरे को अधिक गहन एवं विस्तृत कर पाएँ। साथ ही वे अपनी क्षमताओं का विकास व पूर्ण प्रयोग अपने जीवन को बेहतर बनाने में कर पाएँ जिससे देश व समाज का उत्थान भी हो पाए।

शिक्षार्थियों को पढ़ना-लिखना सिखाने के दौरान यह ध्यान रखें कि –

- इस प्रवेशिका का उद्देश्य बुनियादी साक्षरता और संख्या–ज्ञान से शिक्षार्थियों को अवगत कराना है। साथ ही उन्हें इस ज्ञान से जोड़ना है।

- ये शिक्षार्थी 15 वर्ष अथवा उससे ऊपर की आयु के हैं जिनके पास अनुभव का भंडार है। यह भी संभव है कि उनके पास हमसे अधिक अनुभवों का भंडार हो। इसलिए उनके अनुभवों का सम्मान करें, उन्हें आदर दें और उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनें।
- वे अपने रोज़मर्रा के कार्य स्वयं व अपने ढंग से कर लेते हैं इसलिए उनकी कार्य कुशलता की सराहना अवश्य करें।
- ध्यान रखें कि वे पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में तभी ध्यानपूर्वक जुड़ पाएँगे जब उन्हें पढ़ना उपयोगी लगेगा। इसलिए उन्हें पूरी तैयारी के साथ पढ़ाएँ और ज़्यादा से ज़्यादा उनके जीवन से जुड़े अनुभवों को उदाहरण की तरह समझाने में इस्तेमाल करें।
- ये शिक्षार्थी हिंदी भाषा सुनने और बोलने में सक्षम हैं, वे इस भाषा का प्रयोग अपनी बोलचाल में करते हैं। इसलिए ध्यान रखें कि इस भाषा ज्ञान का प्रयोग कर हम उन्हें पढ़ने-लिखने के अवसर दें। हो सकता है शिक्षार्थी के पास गणित का मौखिक प्रयोग करने की कुशलता और गणना करने के अनौपचारिक तरीके तो हों लेकिन उन्हें अंकों की पहचान न हो और गणितीय समस्याओं को हल करने में कठिनाई होती हो। आपको उन्हें अंक-ज्ञान से जोड़ना है– उनकी गणितीय समझ को बनाते और बढ़ाते हुए।
- पाठों को चित्रों, कहानियों, पोस्टर आदि के द्वारा पढ़ाने का प्रयास करें। चित्र पठन, पोस्टर पढ़ना व अनुमान लगाना, चित्रों को देखकर उसके नीचे लिखे शब्दों को अनुमान लगाकर पढ़ना– ये पढ़ना-पढ़ाना सीखने-सिखाने के तरीके हैं। चित्रों में एक वस्तु भी हो सकती है और एक पूरी प्रक्रिया या घटना भी। आवश्यकता के अनुसार चित्रों का इस्तेमाल विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है, जैसे– चित्र पर बातचीत की जा सकती है, चित्र में उपलब्ध या दी गई वस्तु/घटना पर चर्चा की जा सकती है, चित्र द्वारा अनुमान लगाकर महत्वपूर्ण जीवन कौशल पर आधारित किसी मुद्दे पर चिंतन विश्लेषण किया जा सकता है। प्रवेशिका में भी चित्र देखकर अनुमान लगाकर पढ़ने के अवसर दिए गए हैं, जैसे 'मकान' का चित्र देखकर 'मकान' शब्द का अनुमान लगाना और पढ़ना, परिवार के लोगो का चित्र देखकर 'परिवार' शब्द का अनुमान लगाना और पढ़ना आदि।
- हमारे शिक्षार्थियों का शब्द-भंडार वृहद है, इसलिए आपको इसका इस्तेमाल करते हुए उन्हें पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करनी होगी। इसके लिए हमें व्यक्ति या वस्तुओं के नामों द्वारा उनमें आए अक्षर व शब्दों की पहचान करने पर बल देना होगा।

बुनियादी साक्षरता –

- हम भाषा को पूर्णरूप में बोलते और सीखते हैं, टुकड़ों में नहीं। शब्दों को तोड़कर या जोड़कर पढ़ना-लिखना नहीं सिखाया जा सकता है। इसलिए पढ़ना-लिखना सिखाने के दौरान यह याद रखें कि शब्दों और वाक्यों की मदद से अक्षर की पहचान करवाने व शब्दों को पढ़वाने का काम किया जाए। जैसे 'म' अक्षर की समझ बनाने के लिए वे शब्द जिनमें इस अक्षर का प्रयोग हुआ है उन्हें दिखाना और पढ़वाना, जैसे *आम, माला, माचिस, टमाटर* आदि।
- भाषा एक संदर्भ में अपनी समझ बनाती है। भाषा में संदर्भ के साथ ही लिखना-पढ़ना सिखाया जाए। बिना संदर्भ के भाषा का अर्थपूर्ण होना संभव नहीं है, जैसे – 'हल' शब्द का अकेले प्रयोग हो तो यह समझने में

मुश्किल आती है कि हम औज़ार की बात कर रहे हैं या किसी प्रश्न के जवाब की। वहीं वाक्य में इसका प्रयोग (जैसे – मेरी पहेली का हल मुझे मिल गया) इसके अर्थ की सटीकता व सही समझ बनाने में पढ़ने वाले की मदद करता है। वर्णमाला के द्वारा भी अक्षर ज्ञान व अक्षर की समझ को विकसित करवाने का काम किया जा सकता है पर पहले अक्षरों को शब्दों में दिखाकर, बोलकर बताया जाए और पहचान करवाई जाए। उसके बाद ही वर्णमाला द्वारा पहचान को और मज़बूत किया जाए। इससे भाषा का शब्द भंडार, जिसका इस्तेमाल शिक्षार्थी अपने दैनिक जीवन में रोज़ करते हैं, उससे जोड़कर पढ़ने का प्रयास करेंगे।

- प्रवेशिका में अक्षरों के साथ अलग-अलग मात्राओं को जोड़कर उनकी पहचान करना सिखाया जा रहा है। इससे अक्षर-ध्वनि संबंध समझने में शिक्षार्थी को आसानी होगी और उनकी बेहतर समझ भी विकसित होगी, जैसे– प, पा, पि, पी आदि।
- भाषा-खेलों के द्वारा भी पढ़ना-लिखना सिखाने में मदद मिलेगी। साथ ही अक्षर– ध्वनि संबंध की समझ भी विकसित होगी जिससे पढ़ने-लिखने में आसानी होगी, जैसे– एक से अधिक अक्षरों का प्रयोग करते हुए शब्द बनाना और पढ़ना, शब्दों को बोलना, पढ़ना-लिखना जैसे खेल।
- अक्षर जाल का प्रयोग करके भी अक्षर व मात्रा की पहचान संबंधी समझ को और विकसित व सुदृढ़ किया जा सकता है। अक्षर जाल शब्द निर्माण और शब्दों की पहचान करने का एक अच्छा विकल्प है। प्रवेशिका में कई जगह भाषा खेल दिए गए हैं जहाँ शब्दों को पहचानने का काम व उन्हें पहचान कर उन पर घेरा लगाने की गतिविधियाँ दी गई हैं।

बुनियादी संख्या–ज्ञान

- संख्या–ज्ञान को भाषा के साथ ही जोड़कर पढ़ाने के लिए प्रवेशिका में दोनों को एकीकृत रूप में सम्मिलित किया गया है। कहानी और कविताओं द्वारा भाषा और संख्या–ज्ञान को एक साथ रखा गया है ताकि दोनों की बेहतर समझ बन सके।
- संख्या–ज्ञान से शिक्षार्थी थोड़ा-बहुत परिचित होंगे, क्योंकि वे इसे अपने दैनिक जीवन में सुनते, देखते और करते होंगे, चाहे वह रुपयों का लेन-देन हो, सामान खरीदना हो, सब्ज़ियाँ खरीदना या बेचना हो, सामान गिनना हो आदि। इन सभी कामों में संख्या–ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए पहले जान लें कि शिक्षार्थी को कितना पता है, उसके बाद ही आगे की शुरुआत करें।
- हम अपने आस-पास मौजूद वस्तुओं का उपयोग संख्याओं की पहचान करवाने के लिए कर सकते हैं, जैसे– मोबाइल का इस्तेमाल अंकों की पहचान करने के लिए कर सकते हैं। चूँकि मोबाइल का प्रयोग सभी के दैनिक जीवन की ज़रूरतों से जुड़ा है और इस तरह समझाने से वे ज़्यादा अच्छे से समझ बना सकेंगे और समझेंगे कि पढ़ना-लिखना हमारे जीवन को आसान बनाने में सहायक है। प्रवेशिका में भी इसी तरह के उदाहरणों के साथ संख्या–ज्ञान से परिचित करवाने का काम किया गया है।
- कुछ शिक्षार्थियों को वस्तुओं को गिनने का ज्ञान हो सकता है इसलिए वस्तुओं को गिनकर संख्या की पहचान करवाएँ। संख्या से अवगत होने के बाद ही वे बाकी गणितीय अवधारणाओं को समझ और सीख सकेंगे।

- प्रवेशिका में संख्या की पहचान करवाने के बाद आप पोस्टर, चार्ट व अन्य लिखित सामग्री का इस्तेमाल कर पहचान और समझ को गहरा करवा सकते हैं। फ्लैश कार्ड के इस्तेमाल द्वारा भी संख्या की पहचान करवाई जा सकती है।
- गणितीय अवधारणाओं से परिचित करवाने और उन्हें मज़बूत करने के लिए दैनिक जीवन से जुड़े उदाहरण अधिक से अधिक हैं।
- जोड़ व घटा जैसी गणितीय अवधारणाओं को वस्तुओं के साथ सिखाएँ, जैसे तीन में चार जोड़ने पर क्या मिला, इसे दर्शाने के लिए एक जैसी तीन वस्तुओं में उसके जैसी चार और वस्तुओं को मिलाकर दिखाएँ और गिनने को कहें। उसी तरह घटाने में भी वस्तुओं को हटाकर गिनने के लिए कहें।
- प्रवेशिका में रुपयों के द्वारा भी जोड़ना और घटाना सिखाया गया है जिससे जोड़ व घटा की गणितीय अवधारणा को भी समझा जा सके और रुपयों की समझ पर भी साथ काम किया जा सके। शिक्षार्थियों के साथ एक छोटी गतिविधि भी करवाई जा सकती है जिससे उन्हें रुपए लेन-देन की समझ और जोड़ व घटा की गणितीय अवधारणा साथ-साथ समझाई और सिखाई जा सके। उदाहरण के लिए दुकान से कपड़ा खरीदना, तेल खरीदना, चप्पल खरीदना आदि में सामान की दर, उसकी मात्रा, माप की इकाई आदि पर चर्चा की जा सकती है।
- कहानी व गीत के द्वारा भी गणितीय अवधारणाओं को समझाने का प्रयास किया जा सकता है। इकाई, दहाई जैसी अवधारणाओं को समझाने के लिए दैनिक जीवन से जुड़े अनुभव लेने का प्रयास करें, जिससे शिक्षार्थी की समझ बेहतर हो पाए। अलग-अलग वस्तुओं के बंडल बनवाकर भी इस अवधारणा को समझाया जा सकता है। इससे शिक्षार्थियों को समझने में आसानी भी होगी क्योंकि इस तरह के काम वे अपनी निजी ज़िंदगी में करते हैं।
- प्रवेशिका में गुणा की अवधारणा को सिखाने के लिए जोड़ की समझ का प्रयोग किया गया है। इससे न सिर्फ़ जोड़ की समझ पुख्ता होगी बल्कि गुणा को समझाना भी आसान होगा। इसके साथ यह भी ज़रूरी है कि वस्तुओं के साथ गुणा को समझाया जाए, जैसे– चार गुना समझाने के लिए एक वस्तु को चार बार दर्शाएँ। इसी तरह 2×2 दिखाने और समझाने के लिए 2 वस्तुओं को दो अलग-अलग समूह में रखना और गिनकर बताना।
- मापन की अवधारणा को वज़न, तौल, ठोस व तरल पदार्थ में अलग-अलग मापने के तरीकों के बारे में बातचीत के द्वारा समझाएँ। शिक्षार्थी मापने की इकाइयों को सामान खरीदते समय सुनते हैं और इनसे कुछ-कुछ परिचित भी होंगे। हमारा उद्देश्य यह है कि जो जानकारी शिक्षार्थियों के पास है, उसको जानें और फिर उससे जोड़ते हुए उन्हें मापन की इकाइयों से परिचित करवाएँ।
- अलग-अलग आकार के बर्तनों का इस्तेमाल करके इकाइयों की पहचान व किस तरह की वस्तु के लिए हम किस इकाई का इस्तेमाल करते हैं, इसपर बातचीत करें। इकाई बदलने के बारे में भी इसी तरह बातचीत की जा सकती ताकि इकाइयों की समझ को विकसित किया जा सके। अगर कोई सब्ज़ी बेचने का काम करता है तो उस व्यक्ति से बाट मँगवाकर, बाट दिखाकर भी किलोग्राम और ग्राम की समझ बनाने में आसानी होगी। इसी तरह दूध मापने के यंत्रों को दिखाकर लीटर की समझ बनाने में मदद की जा सकती है।

- समय देखना सिखाने के लिए प्रवेशिका में सुई वाली और डिजिटल, दोनों घड़ियों का उदाहरण देकर बात की गई है। कोशिश करें कि समय देखना सिखाने के लिए एक दीवार घड़ी को शिक्षार्थियों के सामने लाकर सुइयों की पहचान और सुइयों को घुमाकर समय बदल-बदल कर, समय देखना सिखाएँ और उन्हें खुद घड़ी देखकर समय बताने को कहें। इससे समय सीखना मज़ेदार भी होगा और उसकी पूरी समझ भी बनेगी।
- डिजिटल घड़ी को शिक्षार्थियों के सामने ज़रूर लाएँ ताकि वे डिजिटल संख्याओं को पढ़ना सीख पाएँ और डिजिटल तराज़ू, घड़ी आदि को आसानी से पढ़ पाएँ।
- 12 घंटे और 24 घंटे की घड़ियों को पढ़ने के अलग-अलग तरीके हैं इसलिए 24 घंटे की घड़ी को कैसे पढ़ा जाता है, इस पर बात करें और उसे पढ़ने के तरीके ज़रूर बताएँ। ट्रेन के टिकट का इस्तेमाल कर 24 घंटे की घड़ी को पढ़ना सिखाया जा सकता है।
- कैलेंडर को पढ़ना और देखना सिखाने के लिए शिक्षार्थियों को एक कैलेंडर दिखाएँ और महीनों के नाम और दिनांक पढ़ना सिखाएँ। शिक्षार्थियों को हर दिन कैलेंडर देखकर महीना और दिनांक बताने का काम दें जिससे वे इसका इस्तेमाल करें और पढ़ें।
- प्रवेशिका में महत्वपूर्ण जीवन कौशल से संबंधित विषयों जैसे– कानूनी जानकारी, वित्तीय साक्षरता आदि से जुड़े विषय जैसे मतदान, बैंक खाता संबंधी जानकारी; पर बातचीत के लिए अवसर दिए गए हैं। चेक बुक, जमा पर्ची आदि को शिक्षार्थियों के साथ साझा करके उन्हें पढ़ना और भरना सिखाएँ।

असीम शुभकामनाएँ!

निर्माण-समिति

परामर्श

दिनेश प्रसाद सकलानी, *निदेशक*, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
श्रीधर श्रीवास्तव, *संयुक्त निदेशक*, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

निर्माण-समिति

अक्षय कुमार दीक्षित, *मेंटर शिक्षक*, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली
कृत प्रसाद, *प्रधानाचार्य*, मध्य विद्यालय, गौढ़ापुर, चंडी, नालंदा, बिहार
जुबैर कुरैशी, *पूर्व निदेशक*, राज्य संसाधन केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली
निशात फ़ारूक़, *पूर्व निदेशक*, राज्य संसाधन केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली
मंजुला माथुर, *सेविानवृत्त प्रोफ़ेसर*, सी.आई.ई.टी, नयी दिल्ली
यासमीन अशरफ़, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, नयी दिल्ली
वर्षा सिंघल, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, नयी दिल्ली
अमन गुप्ता, *परामर्शदाता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, नयी दिल्ली
शिवा श्रीवास्तव, परामर्शदाता, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, नयी दिल्ली
सत्यवीर सिंह, प्रधानाचार्य, श्री नेहरू इंटर कॉलेज, पिलाना, बागपत, उत्तर प्रदेश
सुमन सिंह, *प्रधानाचार्य*, मध्य विद्यालय, छपरा, बिहार
सोनाली, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

समीक्षा-समिति

आयुष्मान गोस्वामी, *प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष,* शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, राजस्थान
कंचन देवरारी, *अपर निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., देहरादून, उत्तराखंड
चाँदकिरण सलूजा, *निदेशक,* संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान, नयी दिल्ली
प्रशांत पाण्डेय, *सहायक निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., रायपुर, छत्तीसगढ़
संजीव कुमार, *पूर्व प्रधानाचार्य*, डाइट, आर.के. पुरम, नयी दिल्ली
सत्यवीर सिंह, *प्रधानाचार्य*, एस.एन.आई. महाविद्यालय, पिलाना, उत्तर प्रदेश
उषा शर्मा, *प्रोफ़ेसर एवं प्रभारी*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य समन्वयक

उषा शर्मा, *प्रोफ़ेसर* एवं *प्रभारी*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

आभार

परिषद्, उन सभी चित्रकारों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनके चित्रांकन पुस्तक में शामिल किए गए हैं। पुस्तक में चित्रांकन के लिए परिषद् शशि शेट्ये, नई दिल्ली; सुनीता, लोक चित्रकार (मांडना शैली), जयपुर, राजस्थान; सुभाष व्याम, लोक चित्रकार (गोंड भित्ति शैली), भोपाल, मध्य प्रदेश; मानसिंह व्याम, लोक चित्रकार (गोंड भित्ति शैली), भोपाल, मध्य प्रदेश; प्रशांत सोनी, उदयपुर, राजस्थान; सागर अरणकल्ले, नोएडा, उत्तर प्रदेश; शुभम लखेरा, चंदेरी, मध्य प्रदेश; हबीब अली, ग्वालियर, मध्य प्रदेश; अबीरा बंद्योपाध्याय, नयी दिल्ली; जितेंद्र चौरसिया, देवास, मध्य प्रदेश; हरिओम पाटीदार, धार, मध्य प्रदेश; नीलेश गहलोत, धार, मध्य प्रदेश; रुचिन सोनी, नई दिल्ली; मयूख घोष, कोलकाता, पश्चिम बंगाल; सच्चिदानंद झा, मधुबनी, बिहार; राधाश्याम राउत, भुवनेश्वर, ओडिशा और श्रेयसी दत्त, मधुबनी, बिहार का विशेष आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, प्रवेशिका के आवरण पृष्ठ के लिए पद्मश्री दुर्गाबाई व्याम, लोक चित्रकार (गोंड भित्ति शैली), भोपाल, मध्य प्रदेश की आभारी है।

परिषद्, भारत निर्वाचन आयोग, राष्ट्रीय मतदाता सेवा पोर्टल, भारतीय कृषि अनुसंधान केंद्र, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, प्रधानमंत्री जन-धन योजना, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण, राज्य संसाधन केंद्र, इंदौर के प्रति भी आभार प्रकट करती है जिनकी वेबसाइट से प्रवेशिका के निर्माण के लिए उपयोगी सामग्री और चित्र प्राप्त हुए।

परिषद्, प्रवेशिका के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ की बानी बोरा, वरिष्ठ परामर्शदाता; याचना गुप्ता, वरिष्ठ परामर्शदाता; रोहित नैनवाल, परामर्शदाता; ज्योति तिवारी परामर्शदाता; सिद्धांत सिंह, परामर्शदाता; भावना खेड़ा, कनिष्ठ परियोजना अध्येता; ईशवीन कौर बालूजा, ग्राफिक आर्ट्रिस्ट और एनीमेटर, शुभम कुमार, सीनियर ग्राफ़िक डिज़ाइनर; फरहान अहमद, सीनियर ग्राफ़िक डिज़ाइनर, योगेश प्रताप सिंह, डीटीपी ऑपरेटर और जितेंद्र, टाइपिस्ट की आभारी है। परिषद्, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. की सपना, टाइपिस्ट के प्रति आभारी है जिनके सहयोग से इस कार्य को पूरा करने में मदद मिली।

प्रकाशन प्रभाग से मिले सहयोग का परिषद् आभार व्यक्त करती है।

विषय-सूची

आमुख *iii*

प्रस्तावना *v*

स्वयंसेवी शिक्षकों से दो बातें *vi*

निर्माण-समिति *xi*

आभार *xii*

1. परिवार और पड़ोस **2–17**

- अ, आ, न, प, स, र, व
- 1 से 20 तक की संख्याएँ पहचानना, पढ़ना और लिखना

2. बातचीत **18–37**

- इ, ई, ब, त, म, ख, ट, च
- 21 से 50 तक की संख्याएँ पहचानना, पढ़ना और लिखना
- 50 तक की संख्याओं का जोड़ एवं घटा करना
- इकाई और दहाई समूहों में गिनना

3. हमारा रहन-सहन **38–59**

- ओ, औ, झ, द, ल, ग, क, य
- 51 से 1000 तक की संख्याएँ पहचानना, पढ़ना और लिखना
- इकाई, दहाई और सैकड़े के समूहों में गिनना (स्थानीय मान)
- 2 अंकीय संख्याओं का जोड़ एवं घटा
- एक अंकीय संख्याओं का गुणा करना
- 100 - 100 के समूहों में गिनना

4. हमारे आस-पास **60–75**

- ए, ऐ, ज,भ, ड, ड़, श, ष, अनुस्वार, अनुनासिक
- तीन अंकों वाली संख्याओं का जोड़ एवं घटा करना
- लंबाई, वज़न और धारिता का मापन करना
- दो अंकीय संख्याओं का एक अंकीय संख्याओं से गुणा
- भाग की समझ बनाना

5. खान-पान और सेहत **66–89**

- उ, ऊ, ह, छ, थ, फ, ठ
- समय देखना (घंटा, मिनट, सेकंड)
- समय की इकाईयों को परस्पर बदलना
- डिजिटल अंको की पहचान करना एवं लिखना

6. मतदान **90–101**

- क्ष, घ, ध, ढ, ढ़
- समय की माप का उपयोग करना (12 और 24 घंटे वाली घड़ी)
- कैलेंडर, समय-सारिणी और रेल टिकट पर दी गई सूचनाओं की समझ बनाना

7. कानूनी जानकारी **102–111**

- त्र, श्र, ण, ऋ, ज्ञ
- कानून से जुड़ी शब्दावली को समझना और पढ़ना
- बैंक संबंधी फ़ॉर्म पढ़ना, समझना और भरना (चैक, जमा पर्ची, नकद निकासी पर्ची)
- साइबर सुरक्षा से संबंधित जानकारी